॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

नवम (9वाँ) अध्याय

राजविद्याराजगुह्ययोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ्) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं(न्) तु ते गुह्यतमं(म्), प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं(वँ) विज्ञानसहितं(यँ), यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥1॥

राजविद्या राजगुह्यं(म्), पवित्रमिदमुत्तमम्।
प्रत्यक्षावगमं(न्) धर्म्यं(म्), सुसुखं(ङ्) कर्तुमव्ययम्॥2॥

अश्रद्दधानाः(फ्) पुरुषा, धर्मस्यास्य परन्तप।
अप्राप्य मां(न्) निवर्तन्ते, मृत्युसंसारवर्त्मनि॥3॥

मया ततमिदं(म्) सर्वं(ञ्), जगदव्यक्तमूर्तिना।
मत्स्थानि सर्वभूतानि, न चाहं(न्) तेष्ववस्थितः॥4॥

न च मत्स्थानि भूतानि, पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो, ममात्मा भूतभावनः॥5॥

यथाकाशस्थितो नित्यं(वँ), वायुः(स्) सर्वत्रगो महान्।
तथा सर्वाणि भूतानि, मत्स्थानीत्युपधारय॥6॥

सर्वभूतानि कौन्तेय, प्रकृतिं(यँ) यान्ति मामिकाम्।
कल्पक्षये पुनस्तानि, कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥7॥

प्रकृतिं(म्) स्वामवष्टभ्य, विसृजामि पुनः(फ्) पुनः।
भूतग्राममिमं(ङ्) कृत्स्नम्, अवशं(म्) प्रकृतेर्वशात्॥8॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

न च मां(न्) तानि कर्माणि, निबध्नन्ति धनञ्जय।
उदासीनवदासीनम्, असक्तं(न्) तेषु कर्मसु॥9॥

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः(स्), सूयते सचराचरम्।
हेतुनानेन कौन्तेय, जगद्विपरिवर्तते॥10॥

अवजानन्ति मां(म्) मूढा, मानुषीं(न्) तनुमाश्रितम्।
परं(म्) भावमजानन्तो, मम भूतमहेश्वरम्॥11॥

मोघाशा मोघकर्माणो, मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं(ञ्) चैव, प्रकृतिं(म्) मोहिनीं(म्) श्रिताः॥12॥

महात्मानस्तु मां(म्) पार्थ, दैवीं(म्) प्रकृतिमाश्रिताः।
भजन्त्यनन्यमनसो, ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्॥13॥

सततं(ङ्) कीर्तयन्तो मां(यँ), यतन्तश्च दृढव्रताः।
नमस्यन्तश्च मां(म्) भक्त्या, नित्ययुक्ता उपासते॥14॥

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये, यजन्तो मामुपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वेन, बहुधा विश्वतोमुखम्॥15॥

अहं(ङ्) क्रतुरहं(यँ) यज्ञः(स्), स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यम्, अहमग्निरहं(म्) हुतम्॥16॥

पिताहमस्य जगतो, माता धाता पितामहः।
वेद्यं(म्) पवित्रमोङ्कार, ऋक्साम यजुरेव च॥17॥

गतिर्भर्ता प्रभुः(स्) साक्षी, निवासः(श्) शरणं(म्) सुहृत्।
प्रभवः(फ्) प्रलयः(स्) स्थानं(न्), निधानं(म्) बीजमव्ययम्॥18॥

तपाम्यहमहं(वँ) वर्षं(न्), निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं(ञ्) चैव मृत्युश्च, सदसच्चाहमर्जुन॥19॥

त्रैविद्या मां(म्) सोमपाः(फ्) पूतपापा,
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं(म्) प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकम्,
अश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥20॥

ते तं(म्) भुक्त्वा स्वर्गलोकं(वँ) विशालं(ङ्),
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं(वँ) विशन्ति।
एवं(न्) त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना,
गतागतं(ङ्) कामकामा लभन्ते॥21॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां(यँ), ये जनाः(फ्) पर्युपासते।
तेषां(न्) नित्याभियुक्तानां(यँ), योगक्षेमं(वँ) वहाम्यहम्॥22॥

येऽप्यन्यदेवता भक्ता, यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय, यजन्त्यविधिपूर्वकम्॥23॥

अहं(म्) हि सर्वयज्ञानां(म्), भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानन्ति, तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते॥24॥

यान्ति देवव्रता देवान्, पितॄन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या, यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्॥25॥

पत्रं(म्) पुष्पं(म्) फलं(न्) तोयं(यँ), यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं(म्) भक्त्युपहृतम्, अश्नामि प्रयतात्मनः॥26॥

यत्करोषि यदश्नासि, यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय, तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥27॥

Learngeeta.com

शुभाशुभफलैरेवं(म्), मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा, विमुक्तो मामुपैष्यसि ॥28॥

समोऽहं(म्) सर्वभूतेषु, न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां(म्) भक्त्या, मयि ते तेषु चाप्यहम् ॥29॥

अपि चेत्सुदुराचारो, भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः(स्), सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥30॥

क्षिप्रं(म्) भवति धर्मात्मा, शश्वच्छान्तिं(न्) निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि, न मे भक्तः(फ्) प्रणश्यति ॥31॥

मां(म्) हि पार्थ व्यपाश्रित्य, येऽपि स्युः(फ्) पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः(स्), तेऽपि यान्ति परां(ङ्) गतिम् ॥32॥

किं(म्) पुनर्ब्राह्मणाः(फ्) पुण्या, भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं(लँ) लोकम्, इमं(म्) प्राप्य भजस्व माम् ॥33॥

मन्मना भव मद्भक्तो, मद्याजी मां(न्) नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवम्, आत्मानं(म्) मत्परायणः ॥34॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(य्ँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

स्तर 2 उच्चारण नियमावली

- **अवग्रह** - अवग्रह 'ऽ' केवल एक चिह्न है जो लुप्त हुये 'अकार(अ)' का सूचक है। स्वतन्त्ररूप उच्चारण नहीं है।
- **मृदु व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम (ग, घ, ङ,ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) वर्ण, य, र, ल, व, ह।
- **कठोर व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के प्रथम, द्वितीय वर्ण (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ) एवं श, ष, स
- **जिह्वामूलीय** - 'क' या 'ख' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग जिह्वामूलीय (×ख), उच्चारण ख् की तरह
- **उपध्मानीय** - 'प' या 'फ' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग उपध्मानीय (×फ), उच्चारण फ् की तरह
- **श्रीमद्भगवद्गीता में प्रयुक्त छन्द** - श्रीमद्भगवद्गीता में दो ही प्रकार के छन्दों का उपयोग हुआ है।
  1. **अनुष्टुप्** - 4 चरण, 32 अक्षर, प्रत्येक चरण में 8 अक्षर 2. **त्रिष्टुप्** - 4 चरण, 44 अक्षर, प्रत्येक चरण में 11 अक्षर

  # पूरी गीता में पांच स्थानों पर अपवादस्वरुप (2/6, 2/29, 8/10, 11/1,15/3) किसी चरण में नियत अक्षरों से एक अक्षर न्यून या अधिक पाये जाते हैं।
- **आघात के अपवाद नियम** - स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी उसमें एक ही वर्ण के दो बार आने पर, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने पर, प्रथम वर्ण रेफ(उपर र्) या हकार होने पर आघात नहीं दिया जाता।
- **विसर्ग(ः) सन्धि नियम** विसर्ग(ः) का उच्चारण पूर्व/पर वर्ण सन्दर्भानुसार ह, ख्, फ्, श्, ष्, स्, र् जैसा होगा।

1. **उत्व सन्धि - अ+ः+अ = ओऽ** - दर्प+ः+अभिमानश्च = दर्पोऽभिमानश्च

   अ+ः+मृदुवर्ण = ओ - दुराचार+ः+भजते = दुराचारो भजते

2. **लोप सन्धि - अ+ः+अकारभिन्नस्वर** = मन+ः+आधत्स्व = मन आधत्स्व

   आ+ः+कोई भी स्वर या मृदुवर्ण = माययापहृतज्ञाना+ः+आसुरम् = माययापहृतज्ञाना आसुरम्

3. **रुत्व सन्धि - अ/आ भिन्नस्वर + : +कोई भी स्वर / मृदुवर्ण = र्** - दु+ : + निरीक्ष्यम् = दुर् + निरीक्ष्यम् = दुर्निरीक्ष्यम्

   कोई भी स्वर (अव्यय में) + : + कोई भी स्वर / रेफभिन्न मृदुवर्ण = र् - पुन+ :+ जन्म = पुनर्+ जन्म = पुनर्जन्म

4. **शत्व, षत्व, सत्व सन्धि -**

   कोई भी स्वर + : + च / छ / श ⟶ श् ⟶ योगिन + : + चैनम् = योगिनश्चैनम्
   ट / ठ / ष ⟶ ष् ⟶ धनु + : + टङ्कार = धनुष्टङ्कार
   त / थ / स ⟶ स् ⟶ हन्यु + : + तन्मे = हन्युस्तन्मे

5. **जिह्वामूलीय, उपध्मानीय सन्धि-**

   कोई भी स्वर + : + क / ख ⟶ ख् की ध्वनि ⟶ द्विषत + : + क्रूरान् - द्विषत(×ख्) क्रूरान्
   प / फ ⟶ फ् की ध्वनि ⟶ क्रोध + : + पारुष्यमेव = क्रोध(×फ्) पारुष्यमेव

Learngeeta.com

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।